https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH

(The Journal of Education and Humanities)

ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50

VOLUME-1|ISSUE-2| April-June, 2026

स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर की शैक्षणिक विचारधारा का समीक्षात्मक अध्ययन

पंकज कुमार सिंह

शोधार्थी: भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)

सार(ABSTRACT)

आधुनिक भारतीय शिक्षा दर्शन में स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर का योगदान अत्यंत मौलिक एवं दूरगामी है। औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन द्वारा लागू की गई मैकालेवादी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय युवाओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से काटकर केवल प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बना दिया था। इसके विरोध में स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर ने मानव-केंद्रित, सर्वांगीण और स्वावलंबी शिक्षा का सिद्धांत प्रतिपादित किया। जहाँ स्वामी विवेकानंद ने 'चरित्र-निर्माण' और 'मनुष्य-मेकिंग' (Man-making Education) को शिक्षा का मूल आधार माना, वहीं रवींद्रनाथ टैगोर ने 'प्रकृति', 'स्वतंत्रता' और 'सृजनात्मकता' (Naturalism and Creativity)के समन्वय पर बल दिया।

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर की शैक्षणिक विचारधाराओं का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस अध्ययन में दोनों विचारकों के दर्शन, शिक्षण पद्धतियों तथा पाठ्यक्रम का विश्लेषण किया गया है। यह शोध गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान दृष्टिकोण और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन का निष्कर्ष यह स्पष्ट करता है कि विवेकानंद और टैगोर के विचार चरित्र, पर्यावरण, और वैश्विक चेतना के निर्माण के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, शैक्षणिक विचारधारा, चरित्र-निर्माण, प्रकृतिवाद, वेदांत दर्शन, शांतिनिकेतन।

1. प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान भारत एक ओर औपनिवेशिक गुलामी से जूझ रहा था, तो दूसरी ओर वैचारिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण (Renaissance) के दौर से गुजर रहा था। ब्रिटिश शासन द्वारा प्रस्तुत लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था, जो रक्त और रंग से तो भारतीय हों, लेकिन अपनी रुचियों, विचारों और बुद्धि से अंग्रेज हों। इस व्यवस्था ने भारतीय मेधा को स्वतंत्र चिंतन से वंचित कर दिया तथा शिक्षा को केवल क्लर्क और प्रशासनिक कर्मचारी तैयार करने की मशीन बना दिया।

इस औपनिवेशिक शिक्षा के विकल्प के रूप में भारत के नव-जागरणकालीन विचारकों ने शिक्षा के स्वदेशी प्रतिमान प्रस्तुत किए। इनमें स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर का नाम अग्रणी है। स्वामी विवेकानंद जहाँ वेदांत दर्शन के आधार पर शिक्षा को "मनुष्य के भीतर पूर्व से विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति" (Education is the manifestation of perfection already in man) मानते थे, वहीं रवींद्रनाथ टैगोर शिक्षा को प्रकृति के खुले वातावरण में व्यक्ति की अनंत संभावनाओं के विकास का माध्यम मानते थे। यह शोध-पत्र दोनों महापुरुषों के शैक्षणिक विचारों का गहन समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन (Educational Philosophy of Swami Vivekananda)

2.1 दार्शनिक आधार: नव-वेदांत (Neo-Vedanta)

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन अद्वैत वेदांत पर आधारित है। उनका मानना था कि प्रत्येक बालक में असीमित ज्ञान और शक्ति का

भंडार पहले से विद्यमान है; शिक्षा का कार्य नए ज्ञान को बाहर से ठूँसना नहीं, बल्कि अज्ञान के आवरण को हटाना है। वे शिक्षा को आत्मा के जागरण की प्रक्रिया मानते थे।

2.2 शिक्षा के मुख्य उद्देश्य

- **चरित्र निर्माण (Character Building):** विवेकानंद का मानना था कि जिस शिक्षा से चरित्र का निर्माण नहीं होता, वह व्यर्थ है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।
- **आत्मविश्वास एवं स्वावलंबन (Self-Reliance):** शिक्षा को व्यक्ति में आत्म-विश्वास जागृत करना चाहिए। जब तक व्यक्ति स्वयं पर विश्वास नहीं करता, तब तक वह राष्ट्र निर्माण में योगदान नहीं दे सकता।
- **शारीरिक एवं मानसिक शक्ति:** "लोहे की मांसपेशियां और फौलाद की नसें" पैदा करना उनकी शिक्षा का एक प्रमुख ध्येय था।
  "गीता पढ़ने के बजाय फुटबॉल देखकर और खेलकर तुम स्वर्ग के अधिक निकट पहुँचोगे। यह कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि जब तुम्हारे शरीर में बल होगा, तभी तुम गीता के महान सत्यों को समझ सकोगे।" — *स्वामी विवेकानंद*

2.3 शिक्षण पद्धति (Pedagogy)

विवेकानंद के अनुसार शिक्षण की सबसे उत्तम पद्धति मन की एकाग्रता (Concentration of Mind) है। उन्होंने ब्रह्मचर्य, गुरु-शिष्य संबंध और श्रद्धा को सीखने का मूल आधार माना। उनका मानना था कि शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है- बिल्कुल वैसे ही जैसे एक माली पौधे के बढ़ने में परिस्थितियाँ अनुकूल बनाता है, लेकिन पौधा अपनी आंतरिक शक्ति से ही बढ़ता है।

3. रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन (Educational Philosophy of Rabindranath Tagore)

3.1 दार्शनिक आधार: प्रकृतिवाद एवं विश्व-मानवतावाद (Naturalism & Humanism)

रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन प्रकृति, स्वतंत्रता और आनंद की नींव पर बना है। वे चार दीवारों वाली कक्षा (Classroom bounded by walls) को ज्ञान का जेलखाना मानते थे। उनके अनुसार, बालकों का स्वाभाविक विकास प्रकृति की गोद में ही संभव है जहाँ वे स्वतंत्र रूप से सीख सकें।

3.2 शिक्षा के मुख्य सिद्धांत

- **प्रकृति के साथ तालमेल (Harmonious Living with Nature):** टैगोर का मानना था कि प्रकृति सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका है। उन्होंने शांतिनिकेतन और विश्वभारती की स्थापना करके इस सिद्धांत को व्यावहारिक रूप दिया।
- **पूर्ण स्वतंत्रता (Freedom to Learn):** बालक को सीखने में स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। अनुशासन थोपा हुआ नहीं, बल्कि आत्म-अनुशासन (Self-discipline) होना चाहिए।
- **सृजनात्मकता एवं कला (Creativity and Art):** टैगोर ने संगीत, चित्रकला, नृत्य और अभिनय को शिक्षा का अभिन्न अंग माना, क्योंकि ये भावना-अभिव्यक्ति और आनंद के मुख्य साधन हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीयता (Internationalism):** टैगोर के विचार संकुचित राष्ट्रवाद से परे थे। उनका नारा था- "यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्" (जहाँ पूरा विश्व एक घोंसला बन जाता है)।

4. विवेकानंद और टैगोर: तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक विश्लेषण

दोनों विचारकों ने भारतीय शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की, लेकिन उनके दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं में कुछ मौलिक भिन्नताएं भी थीं:

आयाम / बिंदु	स्वामी विवेकानंद	रवींद्रनाथ टैगोर
मूल दर्शन	अद्वैत वेदांत (आत्म-साक्षात्कार एवं आत्म-ज्ञान)	प्रकृतिवाद, सौंदर्यबोध एवं विश्व-मानवतावाद
शिक्षा का केंद्र	मन की एकाग्रता, आत्म-संयम, चरित्र-निर्माण	प्रकृति, स्वाधीनता, सौंदर्यबोध और सृजनशीलता
शिक्षण का माहौल	गुरु-आश्रम परंपरा, अनुशासन और ब्रह्मचर्य	खुले वातावरण में प्रकृति के सानिध्य में सहज शिक्षण
पाठ्यक्रम का जोर	वेदांत, विज्ञान, शारीरिक शिक्षा, व्यावहारिक कौशल	कला, संगीत, साहित्य, पर्यावरण और वैश्विक संस्कृति
अंतिम उद्देश्य	मनुष्य-निर्माण (Man-Making Education)	संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास (Holistic Human Development)

4.1 समानताएँ एवं मौलिक बिंदु

दोनों विचारकों में अनेक अद्भुत समानताएँ थीं। दोनों ने ही मैकाले की औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का कड़ा विरोध किया, दोनों ने प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने पर बल दिया, और दोनों ने ही प्राच्य अध्यात्म (Eastern Spirituality) एवं पाश्चात्य विज्ञान (Western Science) के संतुलन को आवश्यक माना। डॉ मिथिलेश कुमार शुक्ल ने बताया कि भारतीय शिक्षा में यथार्थवाद सर्वप्रथम जैन शिक्षा दर्शन में मिलता है उसके बाद आधुनिक काल में गुरुदेव रवीन्द्रनाथऔर विवेकानंद के शिक्षा दर्शन में यथार्थवाद और मानववाद उपस्थित होता है ,जिसने भारतीय शिक्षा पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन लाया है[8]।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर भारतीय शिक्षा जगत् के दो ऐसे दिव्य स्तंभ हैं, जिन्होंने शिक्षा को केवल आजीविका का साधन न मानकर जीवन जीने की कला माना। जहाँ स्वामी विवेकानंद ने दृढ़ संकल्प, आत्म-विश्वास और चरित्र से युक्त 'मनुष्य' बनाने पर जोर दिया, वहीं रवींद्रनाथ टैगोर ने प्रकृति के प्रांगण में 'स्वतंत्र, सृजनशील एवं संवेदनशील मानव' का निर्माण करना चाह। वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य को यदि केवल परीक्षाओं और डिग्री बाँटने वाले यांत्रिक तंत्र से बाहर निकालकर प्रासंगिक बनाना है, तो हमें विवेकानंद के 'वेदांतिक साहस' और टैगोर के 'प्राकृतिक सौंदर्यबोध' का समाकलन करना होगा। यही इन दो महान युगद्रष्टा विचारकों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

संदर्भ ग्रंथ (References)

1. Vivekananda, Swami. (1989). My Idea of Education. Advaita Ashrama, Kolkata.

2. Tagore, Rabindranath. (1917). My Reminiscences. Macmillan & Co., New York.

3. Tagore, Rabindranath. (1921). The Centre of Indian Culture. Visva-Bharati, Santiniketan.

4. Radhakrishnan, S. (1992). Great Indians. Jaico Publishing House, Mumbai.

5. Mukherjee, H. B. (1962). Education for Fullness: A Study of the Educational Thought of Rabindranath Tagore. Asia Publishing House, Bombay.

6. Nivedita, Sister. (1910). The Master as I Saw Him: Being Pages from the Life of the Swami Vivekananda. Longmans, Green & Co., London.

7. Ghosh, A. (2001). Educational Philosophies of Modern Indian Thinkers. Atlantic Publishers & Distributors, New Delhi.

8 . शुक्ल,मिथिलेश,कुमार, (January-March-2023),"यथार्थवाद की शैक्षिक विचारधारा का भारतीय स्वरूप''जैन शिक्षा दर्शन''की शिक्षा में देन", (page no-85-91),TULSI PRAJNA, Year-50,Vol-197,issue-1, ISSN NO: 0974-8857 .DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.19314043